IJAER/ July-August -2022/Volume-11/Issue-4 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

बेगुसराय जिले के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र की महिलाओं तथा पुरुषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

Rajeev Roy
Research Scholar
Deptt. of Education
B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur

Dr. Mahjabeen Khanam
Professor & Head
Deptt. of Psychology
Jamuni Lal College, Hajipur, Vaishali

1.1 सार–

शिक्षा मानव को अपने विचारों को व्यवहार में परिणित करने, समय एवं परिस्थितियों के अनुसार निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करने, स्वयं तथा अपने परिवेश को समझने की शक्ति प्रदान करने, सुसमायोजन करने की प्रेरणा देती है। मानव शिक्षा के माध्यम से स्वयं को तथा परिवेश को परिष्कृत कर सकता है। इन गुणों के अभाव में व्यक्ति साक्षर भले ही हो, शिक्षित नहीं माना जाना चाहिए। शिक्षा जगत से जुड़े लोग इस तथ्य को अस्वीकृत नहीं कर सकते हैं। जनसंख्या शिक्षा इसी संदर्भ में ग्रहण की जाने योग्य एक दिशा है, जो जन अथवा मानवीय शक्तियों के विकास से जुड़ी है, अर्थात जनसंख्या शिक्षा का विस्तृत अर्थ व्यक्तिगत एवं समष्टिगत रूप से राष्ट्र जन को शिक्षित करने से है। आज भारत तथा सम्पूर्ण विश्व के समक्ष जनसंख्या विस्फोट की समस्या सबसे बडी चुनौती के रूप में है। जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है जो जनसंख्या अथवा मानव शक्ति या संसाधन से सम्बन्धित है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य जनपद बेगुसराय के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र की महिलाओं तथा पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है।

1.2 प्रस्तावना–

जनसंख्या शिक्षा का प्रत्यय नवीन है जिसका संबंध जनसंख्या के आकार, वृद्धि अथवा ह्रास, संरचना, लैंगिक अनुपात तथा वैवाहिक आदि के ज्ञान से होता है। इसी जनसंख्या शिक्षा के अंतर्गत जनसंख्या की वृद्धि और ह्रास के कारण, उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी सन्निहित है। यही नहीं, जनसंख्या वृद्धि की तीव्र गति उस पर नियंत्रण तथा क्रमशः कम होती जा रही जनसंख्या को बढ़ाने हेतु कार्यक्रमों का नियोजन भी इसके अंतर्गत सन्निहित है। जनसंख्या शिक्षा के वर्तमान प्रत्यय को समझने के उपरांत ही उपर्युक्त सभी कार्यक्रमों का आयोजन संभव हो पाएगा। जनसंख्या शिक्षा को अनेक विद्वान परिवार नियोजन या यौन शिक्षा समझते हैं, परंतु यह स्पष्ट समझना आवश्यक है कि जनसंख्या शिक्षा ना तो परिवार नियोजन है और ना ही यौन शिक्षा है। यह दूसरी बात है कि इन दोनों से संबंधित बातों का समावेश जनसंख्या शिक्षा के अंतर्गत किया जा सकता है। जनसंख्या

शिक्षा को कुटुंब छोटा या बड़ा रखने की शिक्षा देने वाली शिक्षा भी नहीं समझना चाहिए। भारत एक विकासशील राष्ट्र है जो विभिन्न समस्याओं तथा चुनौतियों का सामना करते हुए विकसित देशों की श्रेणी की ओर बढ़ता जा रहा है। आज भारत तथा सम्पूर्ण विश्व के समक्ष अनेक चुनौतियाँ विकराल रूप धारण किये खडी हैं जिसमें जनसंख्या विस्फोट की समस्या सबसे बडी चुनौती के रूप में हमारे सामने है। ''पिछले कुछ वर्षों में जनसंख्या विस्फोट ने विष्व की सबसे बडी मूलभूत समस्या का रूप ले लिया है''। वर्ष 2021 में भारत की अनुमानित जनसंख्या 1.3763 अरब हो गयी है। जनसंख्या वृद्धि के कारण क्षेत्रीय स्तर पर आर्थिक एवं सामाजिक विषमता उत्पन्न हुई है अर्थात प्रति व्यक्ति आय तथा सामाजिक स्तर में असन्तुलन उत्पन्न हुआ है। माल्थस के अनुसार, ''जनसंख्या वृद्धि राष्ट्र की आर्थिक स्थिति के लिए अत्यन्त हानिकारक है क्योंकि इस वृद्धि से अनेक समस्याएं उत्पन्न होती हैं।''

जनसंख्या के प्रति जागरूक तथा शिक्षित करने की प्रक्रिया को जनसंख्या शिक्षा की संज्ञा दी जाती है। जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है जो जनसंख्या अथवा मानव शक्ति या संसाधन से सम्बन्धित है। यूनेस्को द्वारा सन् 1970 में बैंकाक में जनसंख्या शिक्षा पर आयोजित कार्यशाला में जनसंख्या शिक्षा को परिभाषित करते हुये कहा गया कि, ''यह एक ऐसा शैक्षिक कार्यक्रम है जो परिवार, समुदाय, राष्ट्र और विश्व में जनसंख्या की स्थिति का अध्ययन करता है। इसका उद्देश्य छात्रों में जनसंख्या वृद्धि के प्रति तर्कसंगत एवं उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार तथा दृष्टिकोण का विकास करना है।''

वेलैंड के अनुसार, ''युवा वर्ग की औपचारिक शिक्षा के माध्यम से परिवार नियोजन का ज्ञान प्रदान करना जनसंख्या शिक्षा है। इसमें जनसंख्या–गतिकी, राष्ट्र के आर्थिक एवं सामाजिक विकास तथा परिवार के आकार का जीवन–स्तर एवं वैयक्तिक जीवन पर प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।''
जनसंख्या शिक्षा को जन–जन तक पहुँचानें के लिए व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास होना अत्यन्त आवश्यक है। वर्तमान समय में समाज तथा राष्ट्र कल्याण के वृहद् परिप्रेक्ष्य को दृष्टिगत रखते हुए जनसंख्या शिक्षा के प्रति व्यक्तियों के दृष्टिकोण तथा अभिवृत्ति में परिवर्तन लाना नितान्त आवश्यक है। जनपद बेगुसराय के महिलाओं तथा पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करने हेतू तथा उनकी अभिवृत्ति में उचित परिवर्तन लाने हेतू इस शोध समस्या का चयन किया गया है।

1.3 उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है :–

- बेगुसराय जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
- बेगुसराय जिले की महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

- बेगुसराय जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- बेगुसराय जिले की महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.4 परिकल्पनाएं–

प्रस्तुत शोध में निम्न परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया गया है :–

- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
- महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
- ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

1.4.1 शोध विधि–

प्रस्तुत शोध हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

1.4.2 जनसंख्या–

प्रस्तुत शोध में, जनसंख्या से अभिप्राय जनपद बेगुसराय के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली विवाहित महिलाओं एवं पुरूषों से है।

1.5 न्यादर्श एवं न्यादर्श प्रविधि–

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा सम्भाविता न्यादर्श विधि के अर्न्तगत यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि द्वारा 200 महिलाओं तथा 200 पुरूषों का चयन किया गया। न्यादर्श का चयन बेगुसराय जनपद के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों से किया गया। चयनित न्यादर्श को निम्न सारणी में प्रदर्शित किया गया है

न्यादर्श प्रारूप–

जनपद	क्षेत्र	लिंग	चयनित महिलाएं एवं पुरुष	उपयोग हेतु न्यादर्श	कुल न्यादर्श
बेगुसराय	ग्रामीण	महिला	107	100	200
		पुरूष	105	100	
	शहरी	महिला	103	100	200
		पुरूष	107	100	
	कुल		**422**	**400**	**400**

1.5.1 सांख्यिकीय प्रविधियाँ–

एकत्रित प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी'परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

1.5.2 व्याख्या एवं विश्लेषण–

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या निम्न प्रकार है :

सारणी – 1

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्तिका स्तर

क्षेत्र	संख्या	आवृत्ति एवं प्रतिशत	जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर		
			निम्न	औसत	उच्च
ग्रामीण	200	आवृत्ति	01	157	42
		प्रतिशत	0.5	78.5	21.00
शहरी	200	आवृत्ति	00	135	65
		प्रतिशत	00	67.5	32.5

सारणी–1 में जनसंख्या शिक्षा के प्रति ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की अभिवृत्तिका स्तर प्रदर्शित किया गया है तथा ग्रामीण क्षेत्र के 200 व्यक्तियों तथा शहरी क्षेत्र के 200 व्यक्तियों को निम्न, औसत और उच्च स्तर में वर्गीकृत किया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र के 78.5 प्रतिशत व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति औसत अभिवृत्ति पायी गयी है। जबकि 21.00 प्रतिशत तथा 0.5 प्रतिशत व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति क्रमशः उच्चतथानिम्न अभिवृत्ति पायी गयी है। शहरी क्षेत्र के 67.5 प्रतिशत व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति औसत अभिवृत्ति तथा 32.5 प्रतिशत व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रतिउच्च अभिवृत्ति पायी गयी है। परन्तु शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रतिनिम्न अभिवृत्ति नहीं पायी गयी है।

सारणी – 2

महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्तिका स्तर

लिंग	संख्या	आवृत्ति एवं प्रतिशत	जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर		
			निम्न	औसत	उच्च
महिला	200	आवृत्ति	01	142	57
		प्रतिशत	0.5	71.00	28.5
पुरुष	200	आवृत्ति	00	150	50
		प्रतिशत	00	75.00	25.00

सारणी–2 में जनसंख्या शिक्षा के प्रति महिलाओं एवं पुरूषों की अभिवृत्ति का स्तर प्रदर्शित किया गया है तथा 200 महिलाओं तथा 200 पुरूषों को निम्न, औसत और उच्च स्तर में वर्गीकृत किया गया है। सारणी

से स्पष्ट है कि 71.00 प्रतिशत महिलाओं में जनसंख्या शिक्षा के प्रति औसत अभिवृत्ति पायी गयी है। जबकि 28.5 प्रतिशत तथा 0.5 प्रतिशत महिलाओं में जनसंख्या शिक्षा के प्रतिक्रमशः उच्च तथा निम्न अभिवृत्ति पायी गयी है। 75.00 प्रतिशत पुरूषों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति औसत अभिवृत्ति तथा 25.00 प्रतिशत पुरूषों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति उच्च अभिवृत्ति पायी गयी है। परन्तु पुरूषों में जनसंख्या शिक्षा के प्रतिनिम्न अभिवृत्ति नहीं पायी गयी है।

सारणी – 3

ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के तुलनात्मक अध्ययन हेतु 'टी–मान'

क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	आवृत्ति अंश	टी–मान	परिणाम
ग्रामीण	200	21.29	5.75	398	2.899''	सार्थक
शहरी	200	22.93	5.56			

सारणी–3 में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के तुलनात्मक अध्ययन हेतु 'टी–मान' प्रदर्शित किया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की संख्या क्रमशः 200 तथा 200 है। जनसंख्या शिक्षा के प्रति ग्रामीण क्षेत्र के व्यक्तियों की अभिवृत्ति का मध्यमान 21.29 तथा मानक विचलन 5.75 है। जनसंख्या शिक्षा के प्रति शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की अभिवृत्ति का मध्यमान 22.93 तथा मानक विचलन 5.56 है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का प्राप्त 'टी–मान' 2.899 है। यह 'टी–मान' 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है क्योंकि यह सारणीमान 2.58 से अधिक है।इससे स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है। मध्यमान द्वारा यह स्पष्ट है कि शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों में ग्रामीण क्षेत्र के व्यक्तियों की अपेक्षा जनसंख्या शिक्षा के प्रति उच्च अभिवृत्ति है।

अतः परिकल्पना कि''ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है''पूर्ण रूप से निरस्त की जाती है।

सारणी – 4

महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के तुलनात्मक अध्ययन हेतु 'टी–मान'

लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	आवृत्ति अंश	टी–मान	परिणाम
महिला	200	22.10	5.83	398	0.035	असार्थक
पुरुष	200	22.12	5.60			

सारणी–4 में महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के तुलनात्मक अध्ययन हेतु 'टी–मान' प्रदर्शित किया गया है। सारणी से स्पष्ट है कि महिलाओं एवं पुरूषों की संख्या क्रमशः 200

तथा 200 है। जनसंख्या शिक्षा के प्रति महिलाओं की अभिवृत्ति का मध्यमान 22.10 तथा मानक विचलन 5. 83 है। जनसंख्या शिक्षा के प्रति पुरूषों की अभिवृत्ति का मध्यमान 22.12 तथा मानक विचलन 5.60 है। महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का प्राप्त 'टी–मान' 0.035 है। यह 'टी–मान' 0.05 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक नहीं है क्योंकि यह सारणीमान 1.96 से भी कम है। इससे स्पष्ट है कि महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। मध्यमान द्वारा यह स्पष्ट है कि महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति लगभग समान है। अतः परिकल्पना कि''महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है''पूर्ण रूप से स्वीकृत की जाती है।

1.6 निष्कर्ष एवं परिणाम–

प्रस्तुत शोध से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं :–

- ग्रामीण क्षेत्र के 78.5 प्रतिशत व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति औसत अभिवृत्ति, 21.00 प्रतिशत व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति उच्च अभिवृत्ति तथा 0.5 प्रतिशत व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रतिनिम्न अभिवृत्ति पायी गयी है।
- शहरी क्षेत्र के 67.5 प्रतिशत व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति औसत अभिवृत्ति तथा 32.5 प्रतिशत व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रति उच्च अभिवृत्ति पायी गयी है। परन्तु शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों में जनसंख्या शिक्षा के प्रतिनिम्न अभिवृत्ति नहीं पायी गयी है।
- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया है। शहरी क्षेत्र के व्यक्तियों में ग्रामीण क्षेत्र के व्यक्तियों की अपेक्षा जनसंख्या शिक्षा के प्रति उच्च अभिवृत्ति पायी गयी है।
- महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति लगभग समान पायी गयी है।
- ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। परन्तु ग्रामीण क्षेत्र के पुरूषों में ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की अपेक्षा जनसंख्या शिक्षा के प्रति उच्च अभिवृत्ति पायी गयी है।
- शहरी क्षेत्र की महिलाओं एवं पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। परन्तु शहरी क्षेत्र के पुरूषों में शहरी क्षेत्र की महिलाओं की अपेक्षा जनसंख्या शिक्षा के प्रति निम्न अभिवृत्ति पायी गयी है।

1.7 शोध निष्कर्ष–

शोधार्थी ने अनुभव किया कि जनसंख्या वृद्धि से निरन्तर नयी समस्याएं सामने आ रही हैं। जनसंख्या शिक्षा का जनसंख्या वृद्धि से होने वाली समस्याओं के निवारण में अमूल्य योगदान हो सकता है। केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकारों द्वारा समय–समय पर जनसंख्या शिक्षा के विकास तथा प्रचार–प्रसार पर

ध्यान दिया गया तथा जनसंख्या शिक्षा को प्रचलित करने के लिए अनेक समितियों, आयोगों तथा योजनाओं का संचालन किया गया। इन योजनाओं के माध्यम से विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या शिक्षा का व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए जिससे ग्रामीण क्षेत्रों के पुरूषों व महिलाओं में जनसंख्या शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति विकसित हो सके। जनसंख्या शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति का विकास करने के लिए सरकार द्वारा व्यक्तियों की मानसिकता, अन्धविश्वासों, रूढ़िवादिता, परम्परावादी दृष्टिकोण में परिवर्तन किया जाना चाहिए तथा उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास किया जाना चाहिए। इसके लिए व्यापक पैमाने पर प्रचार–प्रसार कार्यक्रम संचालित किये जाने चाहिए। सरकारी तथा गैर–सरकारी दोनों संगठनों को जनसंख्या शिक्षा के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने का प्रयास करना चाहिए और जनसंख्या शिक्षा के प्रसार में सहयोग देना चाहिए।

1.8 संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- यूनेस्को (1970). उद्धृत समकालीन भारत और शिक्षा, द्वारा पचौरी, गिरीश, प्रकाशक : विनय रखेजा, व आर0 लाल पब्लिशर एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर, मेरठ, संस्करण 2016,पृ0सं0 – 352
- कविता (2002). नॉलेज एण्ड एटीट्यूड ऑफ स्कूल स्टूडेन्टस अबाउट् पोप्युलेशन रिलेटिड इश्यूज, हेल्थ एण्ड पोप्युलेशन पर्सपेक्टिव्स एण्ड इश्यूज, 25(2), 86–95
- मलिक, आई0बी0आई0 एवं देवानकर, बी0जे0 (2018). आइडेन्टिफिकेशन ऑफ पोप्यूलेशन ग्रोथ एण्ड डिस्ट्रिब्यूशन, बेस्ड ऑन अर्बन जोन फंक्शन, स्सटेनेबिलिटि, 10, 930, 1–13
- माल्थस (1798). उद्धृत द इम्पैक्ट ऑफ पोप्यूलेशन चेन्ज ऑन इकॉनोमिक ग्रोथ इन केन्या, द्वारा ठुक्कु, जी0के0, पॉल जी0 एवं अल्मादी, ओ0,इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इकॉनोमिकस एण्ड मैनेजमेन्ट साइन्सेज, 2013, 2(6), 43–64
- गडिया डी.एस. तथा राखी (2019) : ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की महिलाओं तथा पुरूषों की जनसंख्या शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन, वाल्यूम–8, इश्यू–9, संस्करण 2019।
- राष्ट्रीय जनसंख्या नीति (2000). परिवार कल्याण विभाग, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार
- वर्ल्ड पोप्यूलेषन प्रोस्पेक्टस : द 2017 रिविजन, यूनाईटेड नेशनस डिपार्टमेन्ट ऑफ इकॉनामिक एण्ड सोशल अफेयरस, पोप्यूलेशन डिविजन वेलैंड. उद्धृत समकालीन भारत और शिक्षा, द्वारा पचौरी, गिरीश, प्रकाशक : विनय रखेजा, व आर0 लाल पब्लिशर एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर, मेरठ, संस्करण 2016, पृ0सं0– 353